: चतुर्थ अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों की विशेषताएँ ।

: चतुर्थ अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों की विशेषताएँ।

1. सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ।

2. अन्धविश्वास एवं रूढ़ि परम्परा की कहानियाँ

3. प्रेम संबधी कहानियाँ।

4. झूठ और पाखण्ड का चित्रण करनेवाली कहानियाँ।

5. यथार्थ का चित्रण करनेवाली कहानियाँ।

6. मजदूर और किसानों की संघर्ष की कहानियाँ।

7. भ्रष्टाचार का चित्रण करनेवाली कहानियाँ।

निष्कर्ष

: चतुर्थ अध्याय :

रांगेय राघव की कहानियों की विशेषताएँ।

1. सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करनेवाली कहानियाँ :-

हिंदी कहानी के प्राचीनकाल से लेकर आज तक सामाजिक आदर्श का चित्रण अनेक कहानीकारों द्वारा किया गया है। उसी तरह से डा. रांगेय राघवजी ने भी अपनी कहानियों में आदर्श की स्थापना करने का प्रयास किया है। सामाजिक आदर्श को स्पष्ट करनेवाली कहानियों का विवेचन यहाँ कर दिया है।

अभिमान :-

`अभिमान इस कहानी में स्वाभिमानी पति-पत्नी का चित्रण मिलता है। आनंदी और रग्घू भिखमंगो की बस्तियों में रहते है। बस्ती के सभी लोग भीख माँगकर जिंदगी गुजारते है। लेकिन आनंदी और रग्घू दोनों पति-पत्नी मेहनत-मजदूरी करके अपना और अपने बच्चों का गुजारा करते हैं। यह एक आदर्श दाम्पत्य है। बस्तीवालों की तरह भीख माँगकर जीना उन्हें पसंद नहीं है। दोनों पति-पत्नी मिल में मजदूरी करते है। आनंदी पेट से है, उसे अब काम नहीं होता। मिल भी बन्द हो गई है। काम नही है। आनंदी बीमार पड़ती है। उसके इलाज के लिए पैसे नही है। आनंदी को लगता है कि उसका अंतिम समय आ गया है। तब आनंदी अपने पति रग्घू से कहती है- ``दवा नहीं कर सके, इसका अफसोस मत करना। मत करना दु:ख कि जी जाती तो अच्छा होता ---- मगर तुम जहाँ तक हो सके, भीख न माँगना।``[1]

आनन्दी की भीख की जिंदगी त्यागकर अभिमान से जिने की कोशिश एक सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करती है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 18

गदल :-

`गदल` इस कहानी में एक विधवा स्त्री का चित्रण है। गूजर जाति में मृत्यु के बाद कारज करने की परंपरा है। कारज विधि पर सरकार ने रोक लगाई थी। जब गदल का देवर डोडी की मृत्यु होती है, तब सरकारी नियमों की उपेक्षा कर वह धूमधाम से बिरादरी को खिलाती है। पुलिस को रोके रखने के लिए वह हाथ में बन्दूक लेती है। पुलिस के खिलाफ लड़ती है और कारज पूरा करती है। पुलिस के साथ लड़ते-लड़ते पुलिस के गोली की शिकार बनती है। गदल मरे हुए देवर के आत्मा को शांति दिलाने के लिए खुद की जान न्यौछावर करती है। गदल दरोगाजी से कहती है - ``कारज हो गया, दरोगाजी ! आत्मा को शांति मिल गई।``[1]

मरे हुए देवर की आत्मा को शांति देने के लिए अपने प्राणों की बलि देनेवाली गदल एक सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करती है।

बच्चा :-

`बच्चा` इस कहानी में एक आदर्शवादी दाम्पत्य का चित्रण किया है। गोविन्दसिंह का कोई बच्चा ज़िवित नहीं रहता।गोविन्दसिंह और उसकी पत्नी दोनों विचार विमर्श करके बच्चा गोद लेने का निश्चय करते है। गोविन्दसिंह अपनी पत्नी को बच्चा होनेवाला है का स्वांग रचाने के लिए कहते है। अपना कस्बा छोडकर दूसरे कस्बे में रहने के लिए जाते है। गोविन्दसिंह बच्चा गोद लेने के लिए अनाथालय में जाता है। अनाथालय के सभी बच्चों को देखता है। लेकिन वहाँ उन्हें कोई मनचाहा बच्चा नहीं मिलता। गाविन्दसिंह अनाथालय से लौटने लगता है तब शहर में हिन्दू-मुसलमान के बीच दंगा हो जाता है। इस दंगे में हिंदूओं की बस्ती में एक मुसलमान दाम्पत्य फँस जाता है। इस दाम्पत्य के पास एक बच्चा भी है। आठ-दस लोग पति को मारकर उसके पेट में छुरा मारकर पत्नी को उठाकर ले जाते है।घायल बाप के पास वह बच्चा रोते हुए बैठा है। वह आदमी दम तोड़ देता है। तब गोविन्दसिंह उस बच्चे को उठाकर घर लाता है। उसकी परवरिश की जिम्मेदारी लेता है। हिंदू होकर एक मुसलमान के बच्चे को गोद लेकर एक सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 275

देवदासी :-

`देवदासी` इस कहानी में एक महान वैरागी और त्यागी पुजारी का आदर्श प्रस्तुत किया है। पल्लव-राज के कामाक्षी मन्दिर में रहनेवाले पुजारी रत्नगिरी कठोर तपस्वी है। महाकवि सिन्धुनाद और राजकुमारी इंदिरा में प्रेम था। प्रेम में शादी के पहले उनका शरीर संबंध आकर वे एक पुत्री को जन्म देते है। इस पाप को मिटाने का काम पुजारी रत्नगिरी पर सौपा जाता है। पुजारी रत्नगिरी इस पुत्री को अपना वैराग्य छोडकर अपनी पुत्री घोषित करता है। समाज का रोष लेकर पुजारी रत्नगिरी उस पुत्री को पालने की जिम्मेदारी लेता है। अगर वह उस पुत्री की असलियत समाज को बता देता तो -

``राजमाता इंदिरा का सतीत्व डूब जायेगा ? पांड्य, चोल और चालुक्य देशों में पल्लवराज के कुटुम्ब की निन्दा के गीत गाये जाएगें ? सिन्धुनाद का पाप प्रकट हो जाएगा ? रत्नगिरी की घोर मिथ्या सूर्य की तरह जगमगा उठेगी।``[1]

पुजारी रत्नगिरी और एक आदर्श प्रस्तुत करता है। रत्नगिरी सेनापति के पुत्र धनंजय के कत्ल का इल्जाम अपने पर लेता है। देवदासी रूक्मिणी की सुन्दरता को देखकर धनंजय घायल हो जाता है। मन्दिर के भीतरी परिक्रमा में धनंजय रूक्मिणी से अकेला मिलता है। रूक्मिणी पर बलात्कार करना चाहता है। छिन-झपट में धनंजय उसका गला दबा देता है। रूक्मिणी मर जाती है। उसी समय पुजारी रत्नगिरी वहाँ आता है। सामने का दृश्य देखकर धनंजय को शाप देना चाहता है किन्तु रूकता है। उसने सूर्य्यमणि को वचन दिया है कि उसका विवाह धनंजय से ही कर देगा। इसीलिए धनंजय को भाग जाने के लिए वह कहता है। रूक्मिणी के कत्ल का इल्जाम रत्नगिरी अपने पर लेता है। राजमाता का मान, सिन्धुनाद की कीर्ति और सूर्य्यमणि का वचन आदि के लिए अपना वैराग्य, स्फटिक जैसा पवित्रतम जीवन दाव पर लगाकर दुसरे के कत्ल का इल्जाम अपने सिर पर लेकर पुजारी रत्नगिरी एक सामाजिक आदर्श प्रस्तुत करता है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 184

ममता की मजबूरी :-

`ममता की मजबूरी` इस कहानी में एक पढ़ी लिखी स्त्री का श्रेष्ठ उदाहरण प्रस्तुत किया है।

विमला शर्मा ग्रेजुएट है। पिता रामकिशन के साथ वह घर में रहती थी। उसका अभी तक विवाह नहीं हुआ है। पिता की मृत्यु के बाद घर पर ही बच्चों को पढ़ाकर वह अपनी रोजी चलाती थी। उसके पिता के प्रतिष्ठित मित्र और गुरू आदि ने धोखे से उसपर बलात्कार किया। इसका नतीजा यह हुआ कि वह गर्भवती रहकर उसने एक बच्चे को जन्म दिया। अस्पताल में उसने उस बच्चे का गला घोंट दिया। उसपर मुकदमा दायर किया गया। अदालत में विमला शर्मा उसपर हुये अत्याचार का ब्यौरा बताती है। बच्चे का कत्ल करने का कारण वह बताती है -

``मैंने उस बच्चे को पेट में पाला, क्योंकि मैंने सोचा कि दूसरे की जिन्दगी को मुझे खत्म करने का क्या हक है? मैंने उसे ढोया। लेकिन जब वह पैदा हुआ और मैंने उसका मासूम चेहरा देखा, मुझे लगा कि इसे मैं जिन्दा छोड दू तो इस हराम की औलाद को कौन इज्जत देगा ? अगर मैं पालती हूँ तो यह मुझसे नफरत करेगा या फिर बदचलन नाली का कीड़ा बन जायेगा। इसीलिये मैंने उसका गला अस्पताल में घोंट दिया, ताकि मुझे वहाँ गिरफ्तार कर लिया जाय और फाँसी पर चढ़ा दिया जाय।``[1]

विमला शर्मा अपने पर हुए अत्याचार तथा नाजायज बच्चे का कत्ल करने का कारण सच बताती है। स्त्री अपनी लाज रखने के लिए अदालत में अपने पर हुए अत्याचार की बाते नहीं बताती। अपने पर हुए अत्याचार की बाते बताकर विमला शर्मा समाज में फैली घिनौनी हरकतों से प्राप्त ममता का गला घोंटकर एक पढ़ी-लिखी स्त्री के आत्मसम्मान को प्रस्तुत करती है।

प्रवासी :-

`प्रवासी` कहानी में एक विधवा स्त्री का पवित्र आदर्श प्रस्तुत किया है। अर्चक गोपालन रिटायर्ड पोस्टमास्टर की लड़की को मन से एकदिशा प्रेम करता है। कोमल के मन में भी धीरे-धीरे उसके

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 372

लिए स्नेह उत्पन्न होता है। गोपालन दरिद्र है और कोमल एक धनी की पुत्री है। इसीलिये उसका विवाह एक बड़े घर के लड़के वेंकटरामन से हो जाता है। शादी के कुछ दिन बाद ही वेंकटरामन शराब की नशे का शिकार होकर मर जाता है। गोपालन उसका क्रिया-कर्म करता है। पति के मरने के बाद कोमल अकेली रहती है। उसकी जमींदारी सँभालने का काम गोपालन करता है। कोमल और गोपालन की बार-बार होनेवाली मुलाकात समाज में चर्चा का विषय बनती है। कोमल और गोपालन बिच दोनों के कानों तक पहुँचती है। लेकिन इनके बिच कोई अनुश्चित सम्बन्ध नही है। विधवा कोमल जवान है और गोपालन अविवाहित। गोपालन समाज में होनेवाली चर्चा सुनकर एक दिन साँझ को कोमल का स्वाभिमान जाग उठता है। वह गोपालन को क्रोध से कहती है-

``तुम ! तुम एक स्त्री को अकेली जानकर उसका अपमान करना चाहते थे? तुम एक विधवा को अपवित्र करना चाहते थे ? तुम कहोगे शरीर से क्या होता है ? किंतु मन ? मन भी तो तुम्हारा साँप जैसा काला और विषैला है! तुम जिसे मैंने दया करके इतने दिन खिलाया, मेरी जड़ काटने पर उतारू हो गए ! पापी !``[1]

विधवा कोमल चाहे तो गोपालन के साथ अनुश्चित संबंध रख सकती थी लेकिन उसने पवित्र रहकर एक आदर्श प्रस्तुत किया है।

2. अन्धविश्वास एवं रूढ़ि परम्परा की कहानियाँ :-

अन्धविश्वास एवं रूढि परम्परा का चित्रण रांगेय राघव जी की कुछ ही कहानियों में मिलता है। अन्धविश्वास के कारण लोग अपनी उन्नति को खो बैठते है। उनका विकास नहीं हो पाता। वे हर समय इन विचारों में गढ़े हुए रहते है। अन्धविश्वास और रूढि परम्पराओं पर प्रकाश डालने का कार्य कुछ मात्रा में रांगेय राघव जी ने किया है।

नई जिन्दगी के लिए :-

`नई जिन्दगी के लिए` इस कहानी में रूढ़ि परम्परा के साथ अन्धविश्वास का चित्रण मिलता है। एक निम्न मध्य वर्गीय क्लर्क का परिवार है। क्लर्क की पत्नी ने नौं लडकियों को जन्म दिया है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 395

उसका अन्धविश्वास है कि घर का वंश सिर्फ लड़का चलाता है। लड़कियाँ दूसरों का धन होती है ऐसी धारणा क्लर्क रखता है। लड़का होने के लिए वह बाबा सांवलदास के यहाँ जाता है। बाबा सांवलदास ने दिया हुआ गुटखा हमेशा मुँह में रखता है। उन्हें विश्वास है कि बाबा के दिए हुए गुटखे से, पुजा अर्चा करने से लड़का पैदा होगा। यह सब करने के बावजूद भी उनके घर लड़की पैदा होती है। बाबा सांवलदास ने उन्हें कहा था, ``इस मन्त्र से कुछ भी बढ़कर नहीं !अगर यह भी काम नहीं देता तो समझ ले तेरे भाग्य में आटे का लड़का भी नहीं लिखा है।``[1]

क्लर्क ने इसे देववाक्य समझा और इस अन्धविश्वास के कारण ही उन्हें दस लड़कियों का बाप होना पड़ा।

रोने का मोल :-

`रोने का मोल` इस कहानी में अन्धविश्वास का चित्रण है। श्रीनारायण के घर आठ साल बाद बच्चा पैदा हो गया था। बच्चा पैदा होने के पहले दिन गली में कुत्ता रो पड़ा था। दुसरे दिन ही उनके घर बच्चा हुआ और वह मर गया। श्रीनारायण का अन्धविश्वास है कि कुत्ते के रोने से ही उसका बच्चा मर गया है। कुत्ते को यमदर्शन होते है और वह रोता है। यमदर्शन का अर्थ यम किसी की आत्मा को लेने आया है और उस समय कोई न कोई मर जाता है। श्रीनारायण की पत्नी कहती है -

``नही रे यह बुरा सौन है। यमदर्शन हेते है। क्यों मोहल्ले में मारे है सबको ?``[2]

कुत्ते रात-रात रोने लगते। जब कुत्ता रोता है तब श्रीनारायण की पत्नी को डर लगता है।उसका अन्धविश्वास है कि कुत्ते के रोने से मुहल्ले में कोई न कोई मर जाएगा।

रांगेय राघव जी ने समाजस्थित अनेक अन्धविश्वासों से कुत्ते का रोना भी कैसा अन्धविश्वास है यही इस कहानी में बताया है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 117
2. वही, पृ. 132

प्रवासी :-

`प्रवासी` इस कहानी में अन्धविश्वास का चित्रण मिलता है। मृतक के एकादश का यमभोज पवित्र वैदिक रिति से चलनेवाला ब्राह्मण उसे खाकर अधिक दिन जीवित नहीं रहता। कोनल का पति वेंकटरामन के मरने के बाद गोपालन उसका क्रिया-कर्म करने के लिए जाना चाहता है। उसकी आत्मा को प्रेतयोनि से निकालकर पवित्र करना चाहता है। उसके एकादश का भोजन भी करना चाहता है। यह बात जब गोपालन की भाभी को और पिता को समझती है तब वे गुस्सा हो जाते है और एकादश का भोजन करने को मना करते है। गोपालन जब यह बात नहीं मानता तब उसका पिता नयनाचारी एकादश का भोजन करने का निर्णय लेता है। नयनाचारी एकादश का भोजन करने बैठता है तब गोपालन बड़े दु:ख से कहता है,

``किंतु, पिताजी, तुम मर जाओगे ! क्या तुम नहीं जानते कि पवित्र आचरण रखने वाला ब्राह्मण इसके बाद अधिक दिन तक नहीं जीवित रहता ?``[1]

नयनाचारी का भी इसी बात पर अन्धविश्वास है। उसके मन ने ठान लिया है कि अब वह मर जायेगा क्योंकि उसने एकादश का भोजन किया है। घर आते ही वह शैया पर जा लेटता है और मर जाता है। नयनाचारी का अन्धविश्वास ही उसकी मौत का कारण बन जाता है।

जानवर देवता :-

`जानवर देवता` इस कहानी में अन्धचाल के साथ अन्धविश्वास का चित्रण मिलता है। हुसैन मुहम्मद विलायत से लौटकर आया है। शेखनबी उसे मिलने जाता है तब हुसैन मुहम्मद जानवर देवताओं के बारे में बात करता है। प्राचीन काल से मनुष्य जानवर देवताओं की पूजा करता आया है। इसमें हनुमान बन्दर, नाग, नन्दी बैल, शेर, सुअर आदि जानवरों की पूजा होती है। हिन्दू-मुसलमान लोगों में डराने के लिए गाय की हड्डी दिखाते थे। हिन्दू गाय को पवित्र देवता मानते हैं इसकारण वे डरते है। हिन्दू मुसलमानों को डराने के लिए सुअर के खून का उपयोग करते थे। मुसलमान सुअर को पाक मानते है इसीलिए वह इससे डरते थे। प्राचीन काल में बैलों के सहारे खेती की जाती थी तो बैल किसानों का देवता

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 393

हो गया। लेकिन आज आधुनिक काल में भी जानवरों को देवता मानने की परम्परा है। पूरे विश्व में हमारे दर्शन, हमारे मजहब सब कुछ छोटे है। हुसैन मुहम्मद कहता है-

``नहीं शेख साहब, इन्सान तो हर मुल्क में एक जमाने में जानवर-देवता की पूजा करता था।``[1]

पेड :-

`पेड़` इस कहानी में बरगद के पेड़ के बारे में अंधविश्वास का चित्रण है। पंडित सालिगराम के पुरखों ने घर के मैदान में बरगद का पेड़ लगाया था। अब यह पेड़ फल-फूलकर खूब फैल गया है। इसी की जड़े अपने-आप इतनी फैल गई है कि जमीन का सारा रस चूस लेती है। अब उस जमीन में दिन-रात अंधेरा-सा छाया रहता है। पेड़ की डालियों में अनेक पंछी रहते है। जगह-जगह उसमें खोखले हैं। शायद जगह- जगह उसमे साँप है। पंडित सालिगराम की छोटी बच्ची को साँप काटता है और वह मर जाती है। पंडित सालिगराम का अंधविश्वास है कि यह बरगद का पेड़ पुरखों का दैत्य है और उसीने ही संतान को खा लिया है। उनके घर की कोई बचत नहीं होती इसका भी उसने अनुभव किया। पंडित पेड़ काटने का निश्चय करता है। करीम उससे धर्म की बात करता है तब पंडित सालिगराम कहता है -

``धर्म का नाम न लेना करीम ! मेरी बच्ची का खून है इसके सिर पर। इस पर हत्या का दोष है। जाने कितनों के बच्चों को अभी और काटेगा ? ---- और कमबख्त का हौसला देखो। अब इसका जाल इतना फैल गया है कि हमारे ही घर को ढहा देना चाहता है। मेरे बाद तुम्हारी बारी है करीम ---।``[2]

गाँव भर में पेड़ से एक दहशत छा गई। पेड़ काटने को मजदूर आये। पेड़ काटते समय एक मजदूर को शाख पर ही साँप ने काट लिया और वह नीचे टपककर मर गया। सब मजदूर भाग गये। तब पंडित खुद पेड़ काटने का प्रयत्न करता है उसी समय उसपर जमींदार के गुर्गो के लट्ठ पडते है। पंडित मूर्च्छित हो जाता है। पेड़ के अन्धविश्वास के कारण पंडित सालिगराम को यह सब दु:ख उठाने पडे।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 362
2. वही, पृ. 123

3. प्रेम संबंधी कहानियाँ :-

डा. रांगेय राघव जी ने अपनी कहानियों में प्रेम भाव का भी चित्रण किया है। ऐतिहासिक कहानियों की पार्श्वभूमी होनेवाली कहानियों से आज के सामाजिक स्थिति पर होनेवाली कहानियों में प्रेम का चित्रण मिलता है। प्रेमी-प्रेमिका, भाई-बहन, पति-पत्नी आदि रिश्तो से प्रेम का चित्रण किया है। प्रेम संबंध को स्पष्ट करनेवाली कुछ कहानियों का यहाँ विवेचन किया है।

प्रवासी :-

`प्रवासी` यह एक असफल प्रेम की कहानी है। अर्चक गोपालन और रिटायर्ड पोस्टमास्टर की बेटी कोमल एक दूसरे को चाहते है। गोपालन अर्चक होने के कारण उसकी कोई खास कमाई नहीं है। कोमल के पिता कोमल की शादी अमीर लड़के वेंकटरामन से करना चाहता है। वेंकटरामन एम.ए. होने के बावजूद वह जमींदारी को सँभालता है। इसीलिये वेंकटरामन के साथ कोमल का विवाह हो जाता है। गोपालन का दिल टूट जाता है। कुछ दिन बाद वेंकटरामन शराबी बन जाता है। शराब का नशा अधिक करने से वह मर जाता है। कोमल अपने पति का क्रिया-कर्म करने के लिए गोपालन को बुलाती है। क्रिया-कर्म करने के पश्चात गोपालन कोमल के पति की जमींदारी सँभालता है। कोमल जवान विधवा है और गोपालन अविवाहीत है। इन दोनों के बीच अनुश्चित संबंध होने का चर्चा समाज में चलता है। यह बात दोनों के कानों तक पहुँच जाती है। दोनों में मानसिक अनुश्चित संबंध हो गये है शारिरीक नहीं। एक बार कोमल गोपालन से कहती है-

``कुछ कहना चाहते थे ? कहते क्यों नहीं ? मैं क्या तुमसे कुछ कहती हूँ ? तुम्हारी ही दया से तो सब काम ठीक तरह चल रहे है।``[1]

गोपालन कोमल का हाथ पकड़ता है। कोमल थोड़े देर चूप रहती है और झटकेसे हाथ सटकती है। दोनों में मानसिक प्रेम है उसे शारिरीक प्रेम में बदलने के लिए कोमल इन्कार करती है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ- भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 395

देवदासी :-

ऐतिहासिक पार्श्वभूमी की इस कहानी में एक युवक और देवदासी के अधुरे प्रेम का चित्रण है। सिंहलद्वीप का निवासी रंगभद्र देवदासी रूक्मिणी से प्रेम करता है। पल्लव-राज के विशाल कामाक्षी मन्दिर में पुजारी रत्नगिरी के साथ देवदासी रूक्मिणी रहती है। देवदासी रूक्मिणी देवता को निष्काम रूप से अर्पित हो चुकी है। उसने अपना स्त्रीत्व, मातृत्व, आजन्म कुमारी रहने का उत्सर्ग किया है। रंगभद्र और रूक्मिणी कामाक्षी मन्दिर के पीछे छिपकर मिलते है। रंगभद्र उसे जीवन का महत्व बताता है। उसे अपने साथ सिंहलद्वीप को लेकर जाना चाहता है। रूक्मिण रंगभद्र को वचन देती हुई कहती है- ``मैं प्रतिज्ञा करती हूँ रंगभद्र, मैं चलूँगी। तुमने मेरी नीरवता में जो वाणी बजायी है उससे मेरा रन्ध्र-रन्ध्र गूँज रहा है। मैं अवश्य चलूँगी।``[1]

कान्ची के देवमन्दिर में महोत्सव का आयोजन किया था। इस महोत्सव में रूक्मिणी नृत्य करनेवाली थी। नृत्य समाप्त होते ही रंगभद्र के साथ सिंहलद्वीप जाने का निश्चित हो गया था। नृत्य समाप्त करके रूक्मिणी मंदिर के भीतर की परिक्रमा में वेश बदलने के लिये आई तब सेनापती पुत्र धनंजय ने उसके साथ बलात्कार करना चाहा। बलात्कार करते समय झटपटी में धनंजय ने रूक्मिणी का गला घोट दिया।रूक्मिणी मर गई। रंगभद्र और रूक्मिणी का प्रेम अधुरा रह गया।

बांबी और मन्तर :-

`बांबी और मन्तर` इस कहानी में शादीशुदा औरत कुँवारे लड़के से इश्क करती है। पतन का बाबू की बहू से प्रेम है। बाबू की बहू और पतन चोरी-चोरी मिलते थे। पतन चौधरी के घर के पिछवाडे खड़ा होकर सीटी बजाकर बाबू की बहू को बुलाता है। पतन का बाबू की बहू से खूब प्रेम है। वह शादीशुदा होने के बावजूद भी उसे अपनाने के लिए पत्तन तैयार है। वह उसे कहता है -
``छोड़ क्यों नहीं देती उसे ? मैं क्या तुमसे रोटी नहीं खिला सकता।``[2]

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 187
2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 92

पत्तन बाबू की बहू को उसके पति को छोडने के लिये कहता है। दोनों के प्रेम की बिरादरी में चर्चा होती है। बाबू को दोनों के प्रेम का पत्ता चलता है। दोनों को मिलते हुए बाबू पकड़ लेता है। यही दोनों का प्रेम खत्म हो जाता है।

अवसाद का छल :-

`अवसाद का छल` इस कहानी में एक अध्यापिका और सैनिक के प्रेम का चित्रण मिलता है। पुष्पा और चन्द्रमोहन कालेज से एक दूसरे को चाहते है। कालेज पूरा होने के बाद वे एक दुसरे से बिछडते है। पुष्पा ने बी.ए. किया है। अब वह कलकत्ते में अध्यापिका है। चन्द्रमोहन पाइलट बन गया है। अब वह कलकत्ते के दमदम हवाई अड्डे में आ गया है। एक दिन चन्द्रमोहन पुष्पा से मिलने के लिये आता है। अब दोनों का पेशा अलग है। चन्द्रमोहन युरोप की लड़ाई पर जानेवाला है। लड़ाई खत्म होते ही उसे नौकरी से निकाला जायेगा। नौकरी छुटने के बाद वह पुष्पा के पास आना चाहता है। मिलते समय चन्द्रमोहन निस्संकोच उसके गाल को चूम लेता है। तब पुष्पा लाज से मुस्कराकर कहती है, -

``अनाड़ी ।बरसों हो गये तमीज न आई। अब यह बचपन के दिन है ? यह तो सब कालेज में बीत गये।``[1]

चन्द्रमोहन बर्मा चला जाता है। लड़ाई में वह मारा जाता है।

ऊँट की करवट :-

`ऊँट की करवट` इस कहानी में वासनाग्रस्त प्रेम का चित्रण मिलता है। गंगापत्रो की बस्ती में रहनेवाली गिरिजाकुमार की बहु सरयू अत्याधिक सुंदर है। गाँव का नया दरोगा सरयू के सौंदर्य पर मर मिटता है। उसे पाने के लिए अनेक बहाने ढूँढता है। एक बुढ़िया के द्वारा सरयू को पत्र भेजता है। सरयू के मन में प्रेम था लेकिन उसपर मर्यादाओं का बंधन है। इसीलिए वह दरोगाजी को अपने घर बुलाती है। दरोगाजी रात के समय उसके घर जाता है। अपनी वासना की अपूर्ण प्यास बुझाकर आता है। अतृप्त रहने की भावना उसे हुस्ना तवायफ के घर लेकर जाती है। वह नशे में चूर है हुस्ना को सरयू समझकर बड़बड़ाता

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग -1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 29

है,-

``आज की रात कितनी अच्छी है। ऐसे ही आया करूँगा चुपके से ऐसे ही चला जाया करूँगा। किसी को कानों-कान खबर नहीं होगी। अगर किसी ने तुमसे कुछ कहा तो साले की चमड़ी उधेड़ दूँगा।``[1]

सरयू के घर रात को चुपके से दरोगा आने-जाने लगा। एक दिन नशे में चूर दरोगा का भयावह रूप देखकर सरयू ने उसके हाथ बाँध दिये। उसने शोर मचाया। लोग आने लगे लेकिन दरोगा भाग गया। गिरिजाकुमार ने उसपर मुकदमा दायर किया। लेकिन रिश्वत देकर वह छुट गया। अब उसे सब डरने लगे। सरयू भी उसके पास आती जाती है। अपने पति से डरती नहीं है।

अंगारे न बुझे :-

`अंगारे न बुझे` इस कहानी में मैना और कंचन की प्रेम का चित्रण है। कंचन चौधरी का बेटा है। मैना लोहपीटा जाति की एक सुंदर लड़की है। कंचन गाँव की जवान छोरियों के साथ इश्क का खेल खेलता रहता है। कंचन की नजर मैना पर पड़ती है। मैना से वह प्यार करने लगता है उसे रानी बनाने का सपना देखता है। मैना के मन में भी उसके लिए प्रेम है लेकिन अपनी बिरादरी से डरती है। एक रात कंचन मैना को लेकर जाने के लिए आता है। तभी कंचन के पिता और बिरादरी के लोग आते है कंचन भी भाग जाता है। कंचन इसे अपमान समझकर लोहपिटा जाति के कुछ आदमियों को गिरफ्तार करवाता है। फिर भी मैना इसे नही डरती। कंचन बिछिया नामक लड्की द्वारा मैना को फँसाता है। एक रात उसका उपभोग लेता है। एक रात घर से दूर रही मैना को उसके पिता उसके गाल पर तपे सलाखों से दाग देता है।उसकी सुंदरता को कुरूप बनाता है। कंचन मैना के गालो को देखता है उसे कहता है, -

``गालो से क्या हुआ मैना ! तुझे अब भी रानी बना दूँगा। मैं तुझे कभी नहीं छोड सकता।``[2]

कंचन मैना के सौदंर्य पर जिसप्रकार प्रेम करता है उसी प्रकार उसकी कुरूपता पर भी करता है। लेकिन मैना अपनी बिरादरी के साथ गाँव छोड़कर चली जाती है।

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग -2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 100
2. वही, पृ. 172

4. झूठ और पाखण्ड का चित्रण करनेवाली कहानियाँ :-

झूठ और पाखण्ड की वृत्ति डा. रागेय राघव जी की कुछ कहानियों में देखने को मिलती है। सुंदर युवती को फँसाकर उसपर बलात्कार करना, पंच, पुलिस को रिश्वत देकर दुसरों प्र अत्याचार करना, झूठ और पाखण्ड का सहारा लेकर अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाना आदिओं का चित्रण रांगेय राघव जी की कुछ कहानियों में मिलता है।

ममता की मजबूरी :-

`ममता की मजबूरी` इस कहानी में पिता समान प्रतिष्ठित व्यक्ति झूठ का सहारा लेकर एक युवती पर बलात्कार करते है। मास्टर रामकिशन शर्मा की लड़की विमल शर्मा अपने पिता के मृत्यु के बाद नौकरी की तलाश में है। वह पिता के मित्रों के पास नौकरी माँगने के लिए जाती है। मित्रों के साथ उसके गुरू भी है। वे सभी विमला को धोखे से एक जगह पर बलात्कार करते है। विमला जज के सामने बयान में कहती है-

``पिता का मित्र जानकर मैं उनसे नौकरी माँगने गई थी कि कहीं मुझे जगह दिला दें। और गई थी उनके साथ, जो मेरे गुरू थे। वही मुझे ले गए थे। उन दोनों ने मुझे जबर्दस्ती गन्दा कर दिया।``[1]

ऐयाश मुर्दे :-

`ऐयाश मुर्दे` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण मिलता है। समाज जिनकी ओर पवित्र भावनाओं से देखता है वह फकीर झूठ का सहारा लेकर एक औरत की इज्जत लूटना चाहता है। फकीर के पास एक औरत तीन दिन लगातार दुआ माँगने के लिये आती है। फकीर उसकी सुंदरता देखकर वासनाग्रस्त होता है। फकीर के पास औरत मनौती मनाने के लिये आती है। वह औलाद चाहती है, उसकी कोई औलाद नहीं हैं। फकीर उसको रात को आने के लिए कहता है। स्त्री जब रात को आती है तब उसे फँसाकर उसपर बलात्कार करने की कोशिश करता है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 372

``फकीर पागल हो रहा था। उसने उसे अपनी ओर खींच कर उसे अपने शरीर से लगाकर भींच लिया। स्त्री छटपटाने लगी। उसके मुँह से निकला, ``मैं तुम्हारी बेटी हूँ बाबा ! यह क्या कर रहे हो ?``[1] उसी वक्त कोई आने से फकीर से तो बच जाती है लेकिन दूसरे दो के हाथों से उसकी इज्जत लूटी जाती है।

गदल :-

`गदल` इस कहानी में पाखण्डी मौनी का चित्रण मिलता है। सरकार ने भीड़ पर पाबंदी लगा दी थी। गदल का देवर डोडी मर गया था। उसका कारज करना था। गदल ने दरोगा को रिश्वत देकर कारज का प्रबंध किया था। गदल का ही यार मौनी बड़े दरोगा को रिश्वत देकर यह कारज रुकवाना चाहता है।कारज में लोग खाना खा रहे है। तभी पुलिस हथियारबन्द होकर आती है और हमला करती है। गदल भी उनका मुकाबला करती है और पुलिस को गोली का शिकार बनती है। मौनी के पाखण्ड से ही गदल को अपनी जान देनी पड़ती है।

पंच परमेश्वर :-

`पंच परमेश्वर` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण मिलता है। चन्दा की बीवी फूलो अपने पति की गरिबी से ऊब गई है। चन्दा का भाई पैसोंवाला है। उसकी अभी तक शादी नहीं हुई है। फूलो उसका पैसा देखकर उसके घर में अपने पति को छोड़कर जाती है। चन्दा को जब यह बात मालूम होती है तब वह पंचायत बुलाता है। पंच परमेश्वर है। परमेश्वर पंच चौधरी को कन्हाई रिश्वत देता है। झूठ और पाखण्ड का सहारा लेकर कन्हाई फूलो को अपना बनाता है।

``कन्हाई फूलो को लेकर लौट आया और रात को कन्हाई और चौधरी ने फिर से ठर्रे की बोतलें खोली और दोनों मस्त होकर पीने लगे।``[1]

तिरिया :-

इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण मिलता है। गाँव का रहनेवाला पिल्ली पैतीस

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 70

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 44

साल का है। उसने मन्दो नामक औरत को भगाकर लाया है। मन्दो में मर्यादा के कोई लक्षण नहीं है। मन्दो लक्खा चौकीदार को जूता फेंकर मारती है। लक्खा चौकीदार को रिश्वत देकर उसे गिरफ्तार करवाता है। तहसीलदार की अदालत में मन्दो बताती है कि पिल्ली ने उसे भगाकर लाया है और वह अब उसके पास रहना नहीं चाहती। स्त्री को भगाने के जुल्म में पिल्ली को दो महीने की जेल हो जाती है। मन्दो झूठी है। उसने पिल्ली का साथ छोडकर डरोगासिंह गूजर के यहाँ वह रहती है। जेल से छूटने के बाद पिल्ली ने देखा- ``भीतर से तभी एक स्त्री निकली। उसके होठों पर मुस्कुराहट थी और वह लजीली सी लगती थी, जैसे घर की बहू हो। वह सोने की हँसली और चाँदी कड़े पहने थी। उसे देख पिल्ली को आश्चर्य हुआ - इतना परिवर्तन ! वह मन्दो थी।``[1]

तबेले का धुंधलका :-

`तबेले का धुंधलका` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का चित्रण मिलता है। देश के विभाजन के बाद पाकिस्तान से जब शरणार्थी भारत में आये तब उन्हें रहने के लिये मकान नहीं था। एक हिन्दू शरणार्थी अपनी पत्नी और बहन को लेकर आया था। किराये से मकान लेने के लिये उनके पास पगड़ी के लिये रूपये नहीं है। शहर में दंगा शुरू हो गया है। रास्ते पर रहना भी मुश्किल है। रहने के लिये एक तबेला मिल जाता है। तबेले के लिये भी पगड़ी की जरूरत है और इस पगडी के बदले उसकी बहन को सेठ का आदमी माँगता है।

``और वह आदमी खड़ा है। बहिन उससे कुछ कर रही है, धीरे-धीरे ही। मै नहीं जानता, बहिन ने क्या कहा है। वह आदमी चला गया है। चलते वक्त वह खुश था।``[2]

झूठ और पाखण्ड से उसके बहन को सेठ का आदमी रखवा लेता है।

बांबी और मन्तर :-

`बांबी और मन्तर` इस कहानी में झूठ और पाखण्ड का सहारा लेकर किस तरह फँसाया

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 48

2. वही, पृ. 30

जाता है इसका चित्रण मिलता है। बाबू की बहू के साथ पत्तन इश्क लड़ाते समय बाबू को रंगे हाथ मिला था। बाबू पत्तन को गालियाँ दे रहा था। बाबू के चंगुल से पत्तन को चौधरी ने निकाला। और उसे कही और फँसाने का उसने इंतजाम किया।

``चौधरी की पुरानी आँखों ने उस नये लड़के को देखा। जैसे बहुत दूर से बाज ने छोटे से पक्षी को देखा है और अब इस चक्कर में है कि किस तरह से झपट्टा मार के इसे पंजों में दबा ले, और चोंच से फिर उसे फाड़ दे ।``[1]

चौधरी ने पत्तन को रेल से आया हुआ चोरी का माल स्टेशन से उठवाकर पहुँचवाने का काम सौंपा। वह काम करते समय पुलिस से पकड़ा गया और अपनी जिंदगी बरबाद करवाई।

लक्ष्मी का वहन :-

`लक्ष्मी का वहन` इस कहानी में स्वार्थ के लिए झूठ और पाखण्ड का किस तरह सहारा लिया है इसका चित्रण मिलता है। सेठ फकिरचन्द के कारखाने में मजदूर हडताल करते है। मजदूरों को बोनस चाहिए। यहाँ छटनी हो रही है। मजदूरों का हडताल देखकर सेठजी कारखाने को ताला लगाते है। यही ताला तोड़कर मजदूर अंदर घुसकर काम करने लगते है। वे ऐलान करते है कि कारखाना सेठजी का नही है मजदूरों का है। यह सुनकर सेठजी को गुस्सा आता है।सेठजी कोतवाली जाकर झूठ और पाखण्ड का सहारा लेकर कोतवाल को खरिदता है-

``उन्होंने जेब में हाथ डालकर नोटों की गड्डी निकालकर प्रेम से कोतवाल की जेब में डालते हुए कहा- ``मैं नहीं जानता। यह आपका काम है।``[2]

पुलिस ने मजदूरों के साथ मारपीट की। पुलिस ने मजदूरों पर गोली चलाई। समाचारपत्रों ने मजदूरों की अराष्ट्रीयता जाहिर कर दी।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 94

2. वही, पृ. 6

5. यथार्थ का चित्रण करनेवाली कहानियाँ :-

साहित्य समाज का आइना है। समाज में जो घटनाएँ होती है उनका साहित्य में कही-ना-कही चित्रण होता है। यथार्थ का चित्रण साहित्य में होना महत्त्वपूर्ण है। यथार्थवादी साहित्य के बारे में डा. नूरजहाँ कहती है- ``साहित्य में जिस यथार्थवाद का चित्रण किया जाता है वह मुख्य रूप से वस्तु जगत और भाव जगत का पूरी ईमानदारी के साथ यथार्थ चित्रण प्रस्तुत करता है।``[1]

रांगेय राघव जी ने कहानी साहित्य में इसका कही-ना-कही दर्शन जरूर मिलता है। सामाजिक यथार्थ को साहित्य के माध्यम से लोगों के सामने लाने का प्रयास रांगेय राघव जी ने अपनी कुछ कहानियों के माध्यम से किया है। उनकी दृष्टि ऐसे यथार्थ को ढूँढने में और उसका चित्रण करने में सफल हुई है। ऐसी ही कुछ कहानियों का चित्रण यहाँ किया है।

गदल :-

`गदल` इस कहानी में गुजर जाति के अलग-से रीति रिवाज, रूढ़ि तथा परम्पराओं का यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। गुजर जाति की गदल एक ऐसी स्त्री है जो एक ही साथ दो परिवार से सम्बन्ध रखती है। पति के मरने के बाद देवर डोडी से सम्बन्ध रखती है। साथ ही गाँव का अधेड उम्र मौनी के साथ भी सम्बन्ध रखती है। देवर डोडी की मृत्यु पर सरकारी नियमों की उपेक्षा कर वह धूमधाम से कारज करती है। कारज के समय आये पुलिस के साथ लड़ते समय पुलिस की गोली का शिकार होती है। कर्तव्य-पूर्ति के संतोष के साथ प्राण त्याग देती है। ``कारज हो गया, दरोगाजी। आत्मा को शान्ति मिल गई।``[2]

पंच परमेश्वर :-

`पंच परमेश्वर` इस कहानी में शहर में रहनेवाले कँहारों के जीवनका यथार्थपूर्ण चित्रण किया है। कन्हाई अपने भाई चन्दा की पत्नी फूलों को पैसे का लालच दिखाकर रख लेता है। फूलों चन्दा का घर छोड़कर कन्हाई के घर में जाकर रहती है। चन्दा पंचायत बुलाता है। कन्हाई सरपंच को रिश्वत देता

---

1. हिन्दी कहानी में यथार्थवाद , डा. नूरजहाँ, पृ. 1
2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 275

है। पंचायत सरपंच के कहने से बड़े भाई के पक्ष में फैसाला सुनाती है। चन्दा पहले तो बहुत दु:खी और अपमानति होता है बाद में यह सोचकर निश्चित हो जाता है कि अब उसका खर्च कम हो जाएगा। इधर बड़ा भाई कन्हाई शंकित हो उठता है कि वह अपने से कम उम्र इस बहू को कितने दिन रख पाएगा।

``कन्हाई ने सिर झुका दिया। उसने मन ही मन अनुभव किया फूलों बहुत जवान थी और वह भाटे पर था।``[1]

वर्तमान युग में भी ऐसी अनेक घटनाएँ घटी है। कँहारों की नैतिकता का यथार्थपूर्ण चित्रण की कहानी है।

ऊँट की करवट :-

`ऊँट की करवट` इस कहानी में वासनाग्रस्त और भ्रष्टाचारी दरोगा का यथार्थपूर्ण चित्रण मिलता है। आज समाज में अधिकार प्राप्त हुए दरोगा अपनी वासना की पूर्ति करने के लिए तथा खुद के इल्जाम से छुटन के लिए क्या-क्या करते है उसका यथार्थ चित्रण इस कहानी में मिलता है। गंगापुत्रो का दरोगा नशे में चूर होकर रात को सरयू नामक विवाहिता के घर जाता है। जो उसकी प्रेमिका है। शराबी दरोगा का यह रूप देखकर डर के मारे वह चिल्लाती है। दरोगा उसे पिस्तौल दिखाता है। तब वह उसे प्यार से पास बुलाकर उसके हाथ बाँधती है। लोग आने लगते है तब उसे भगा देती है। इस तानाशाही के विरूद्‌ध मुकदमा दायर होता है। दरोगा सरयू के घर पिस्तौल भी भूलकर आया है। दरोगा के पास सरयू ने भेजे हुए प्रेमपत्र है इसीलिए वह मुकदने से नही डरता। दरोगा नशे में चूर होकर तवायफ हुस्ना के घर जाकर उसे इन पत्रों के बारे में बताता है। हुस्ना चुपके से वह प्रेमपत्र निकाल लेती है। दुसरे दिन हुस्ना को दरोगा पत्रों के बारे में पुछता है वह इन्कार करती है। दरोगा उसी रात को हस्ना का घर जलाता है। दरोगा के और एक इल्जाम के कारण उसे मुअत्तिल करते है। हुस्ना ने दरोगा पर दावा दायर किया। लेकिन पुलिस का मामला पुलिस ही कमजोर बनाते है। ``पुलिस वाला ठीक हो या गलत, उसकी इज्जत रखना अपनी शान समझते थे। उन्होंने पुलिस के सब मामलों को जहाँ का तहाँ दबा दिया।``[2]

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ- भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 45

2. डॉ. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 104

दरोगा के खिलाफ कोई ठोस सबूत नही मिले इसीलिए डिप्टी साहब ने मुकदमा खारिज कर दिया।

देवदासी :-

`देवदासी` इस कहानी में सुंदर नारी की पीड़ा का चित्रण यथार्थपूर्ण हुआ है। नारी के सौन्दर्य को प्राप्त करने के लिए हर व्यक्ति प्रयास करता है। अपने ओहदे का उपयोग करके एक सुंदर स्त्री को पाने का और उसमें ही उसका अंत करने का इसमें चित्रण है। सेनापति को पुत्र धनंजय देवदासी के सौंदर्य पर मर मिटता है। उसको पाने की लालसा मन में उत्पन्न हुई है। देवदासी रूक्मिणी का नृत्य भो उसे पसंद है। एक बार उसे भोगने की इच्छा से वह बैचेन रहता है। एक बार मौका देखकर उसपर बलात्कार करने का प्रयत्न करता है और छीन-झपट में उसका कत्ल हो जाता है। समाज की ऊँची स्थान पर रहनेवाला व्यक्ति नीचले औरतों के सौंदर्य से इसतरह ही व्यवहार करते है।

``चिल्ला ! जितनी शक्ति हो उतना चिल्ला ! चिल्ला चिल्लाकर आकाश सिर पर उठा ले। देखे कौन तेरी रक्षा के लिए आता है।``[1]

बच्चा :-

`बच्चा` इस कहानी में हिन्दू-मुस्लीम संघर्ष का चित्रण यथार्थपूर्ण हुआ है। हिन्दु-मुस्लिम के बीच दंगा हो गया है।एक मुसलमान दाम्पत्य हिन्दुओं की बस्ती से गुजर रहे है। वे डरे हुए है। पुरूष कह रहा है-

``दुहाई है, हिन्दु भाइयो ! हम बेकसूर हैं। हम तुम्हारी गाय है !``[2]

और तभी कुछ लोग बजरंग बली की जयजयकार करते हुए आगे बढ़े। उन्होंने पुरूष के पेट में छुरा भोक दिया। स्त्री को उन्होंने जबर्दस्ती उठा लिया और उसी गली में खींच ले चले गये। उसकी

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 194

2. रांगये राघव की संपूर्ण कहानियाँ भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री , पृ. 112

इज्जत लूटी गई। आज भी कई-कई जगह ऐसे ही हिन्दु-मुसलमान के बीच दंगे होते रहते है। उसी का ही यथार्थपूर्ण चित्रण किया है।

6. मजदूर और किसानों की संघर्ष की कहानियाँ :-

रांगेय राघव जी की कहानियों में मजदूर और किसानों का संघर्ष यह एक विशेषताएँ दिखाई देती है। संघर्ष आदमी के जीवन में किसी-न-किसी कारण वश होता ही है। पूँजीवादी निम्नवर्ग पर अत्याचार करते रहते है। उसका जवाब देने के लिये संघर्ष की जरूरत होती है। जीवन में संघर्ष के बिना फल नहीं मिलता। उचित कार्य के लिए ही संघर्ष होना चाहिए।

लक्ष्मी का वाहन :-

`लक्ष्मी का वाहन` इस कहानी में सेठ और मजदूर के बिच के संघर्ष का चित्रण हुआ है। फकिरचन्द सेठ अपने कारखाने में मुनाफे के लिए मजदूरों की छँटनी करके पैदावार कम करना चाहता है। इससे माल कम हो और किंमत बढ़ती रहे। इस कारण सेठ ने दो मजदूरों को निकाल दिया हैं। इसके खिलाफ मजदूर हड़ताल करते है। सेठ कारखाने को ताला लगाता है। मजदूर इसके खिलाफ जुलूस निकालकर ताला तोडकर अंदर घुसकर काम शुरू करते है। अपने हक्क के लिए संघर्ष करते है। यह संघर्ष कुचलने के लिए सेठ पुलिस को रिश्वत देकर मजदूरों को मारपीट करवाता है। मजदूरों को गिरफ्तार करवाता है। सेठ को आनंद हुआ है, मुनीमजी से कहता है-

``मुनीमजी, आज ब्राह्मणों को जिमा दो। मेरे सिर पर से बोझा उतर गया है। अब तो सरकार को चाहिए कि हड़ताल ही गैर कानूनी करार कर दी जाय, ताकि वे लोग फिर गोलियों के डर से हिम्मत ही न करें।``[1]

गदल :-

`गदल` इस कहानी में गूजर जाति का एक परिवार और पुलिस के बिच का संघर्ष दिखाया है। गदल का देवर डोडी के मृत्यु के बाद वह कारज करना चाहती है। पच्चीस आदमीयों के ऊपर

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 7

खाना खिलाने को सरकार ने कानून से पाबंदी लगा दी है। गदल धूमधाम से कारज करना चाहती है। दरोगा को रिश्वत देकर कारज का इंतजाम करती है। कारज में लोग खाना खा रहे है तभी पुलिस आती है। बड़े दरोगा को मौनी ने रिश्वत देकर कारज रूकवाने के लिये कहा है। गदल लोगों को खाना खाने के लिये कहती है और बंदूक लेकर पुलिस के साथ संघर्ष करती है।

``दरोगा ने सुना तो चौंका : औरत ! मरद कहाँ गए ! उसके कुछ सिपाहियों ने पीछे से घेराव डाला और ऊपर चढ़ गए। गोली चलाई। गदल के पेट में लगी।``[1]

पुलिस के साथ संघर्ष करते-करते गदल अपनी जान देती है।

नया समाज :-

`नया समाज` इस कहानी में मास्टरों और सरकार के बिच का संघर्ष दिखाया है। लड़ाई के बाद मास्टरों की छँटनी हो रही थी। इसके खिलाफ मास्टर जुलूस निकालते है। जिले-भर में हड़ताल करते है। दैनिक पत्र में यह छपा है कि मास्टरों को शांति से काम लेना चाहिए, किसान-मजदूरों सा हुल्लड़ अच्छा नही है। `इन्स्पेक्टर आफ एज्युकेशन` के दफ्तर में मास्टरों की शिकायते नोट करते है और उस पर ध्यान देने का आश्वासन देते है। हड़ताल लंबे समय तक चलता रहता है। मास्टर सरकार के साथ संघर्ष करते रहते है। लेकिन हड़ताल लंबी खींचने के कारण टूट जाती है। सभी मास्टर हाजिर हो जाते है। मास्टरों का संघर्ष असफल रहता है।

फूल का जीवन :-

`फूल का जीवन` इस कहानी में मालिक के खिलाफ मजदूरों का संघर्ष दिखाया है। चुनाव नजदिक आया है। इस चुनाव नें सेठ मजदूरों की सीटों पर कब्जा जमाना चाहता है। मजदूरों में रूपया बाँटकर उन्हें खरीदना चाहता है। उसी समय लड़ाई का बोनस माँगने के लिये मजदूर हड़ताल करते है। लड़ाई खत्म हुई है लेकिन लड़ाई की मँहगाई खत्म नहीं हुई है। मालिक ने बोनस बंद किया है इसीलिये

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 275

लड़ाई का बोनस मजदूर माँग रहे है। मालिक के साथ संघर्ष कर रहे है। चुनाव पर नजर डालकर सेठ को चुनाव में भीड बनाने के लिये मजदूरों की जरूरत है। इसीलिये मजदूरों को बहकानेवालों का खात्मा करके हड़ताल तोड़ना चाहते है। और चुनाव के लिये खरीदना चाहते है।

``मुंशी जी फिर किंकर्तव्यविमूढ़ होने लगे थे। मैंने धीरे से कहा, ``सुनिए । मजदूरों को खरीद लीजिए। जितने रूपयों की जरूरत हो मुझसे ले जाइए। लेकिन एक भी हाथ से न निकलने पाए।``[1]

रूपयों से मजदूरों को खरीदकर चलनेवाला संघर्ष रोकने में मालिक सफल हो गया।

कठपुतले :-

`कठपुतले` इस कहानी में आजादी के बाद किसान और मजदूर अन्याय के खिलाफ का संघर्ष है। किसान कार्यकर्ता को रैयत को जमींदार के खिलाफ भड़काने के इल्जाम में और एक मजदूर को मालिक को लूटने की कोशिश के इल्जाम में जेल में डाला गया है। उन्हें राजनीतिक बंदी नहीं समझाने से वे हड़ताल कर रहे है। मुकदमा चलाये बीना ही उन्हें जेल में बंद कर दिया है। इन बन्दियोंने बाईस दिन भूख हड़ताल की है। किसान कार्यकर्ता पर जेल में ही मुकदमा चलाया जाता है। अपने बयान में किसानों पर होनेवाले अत्याचार बताता है।

``मैं आपके न्याय पर विश्वास नहीं करता। आप अगर आदमी के बेबात जेल में डाल सकते है तो मैं आप पर यकीन कैसे कर सकता हूँ। आजादी मिली है, लेकिन वह सिर्फ वह चोरबाजारी करने के लिए मिली है। हमको नहीं मिली, जो खेतों में काम करते हैं। दरोगा जी को मिली है जो अब तिरंगा ओढ़कर रिश्वत लेते है।``[2]

आजादी के बाद भी किसान और मजदूर अपने अधिकार के लिए संघर्ष कर रहे है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ- भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्रह, पृ. 113

2. वही, पृ. 457

7. भ्रष्टाचार का चित्रण करनेवाली कहानियाँ :-

हिंदी कहानी के प्राचीन काल से कहानियों में समाज का चित्रण मिलता है। समाज में चलनेवाले व्यवहार, रिती रिवाजों का चित्रण कहानियों में होता है। आधुनिक युग में भ्रष्टाचार के सहारे न्याय तथा संपत्ति को लूटते रहते है। स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद भी भ्रष्टाचार की नीति रही है। डा. हेतु भारद्वाज के अनुसार - ``स्वतंत्र भारत के अधिकारी की प्रतिमा स्वार्थांधता, धनलोलुपता, भ्रष्टता, बेइमानी, पक्षपात, विलासिता जैसे दुर्गुणों से मंडित है। उसमें मानवीय संवेदनाओं तथा संबंधों की आत्मियता का ऱ्हास हो गया है। उसका जीवन नैतिक मूल्यों की दृष्टि से खोखला है तथा वह आदर्शविहीन जिंदगी जी रहा है।``[1]

डा. रांगेय राघव जी ने भी अपनी कहानियों में स्वतंत्रता के पहले और स्वतंत्रता के बाद का भ्रष्टाचार का चित्रण किया है।

चिड़ी के गुलाम :-

`चिड़ी के गुलाम ` इस कहानी में भ्रष्टाचार का चित्रण मिलता है। प्रताप एक नेक आदमी है। मैजिस्ट्रेट के दफ्तर में वह काम करता है। दफ्तर में रिश्वत के बीना कोई काम नहीं होता है। यहाँ भ्रष्टाचार का सागर देखने को मिलता है। चपरासी से लेकर मैजिस्ट्रेट साहब तक सब भ्रष्टाचारी है। प्रताप रिश्वत के खिलाफ है।

`` न खाता है, न खाने देता है। अब आप से क्या छिपा है। इतने आदमी है। इतना खर्चा है, और मँहगाई से तो आप वाकिफ हैं ही ----।``[2]

यहाँ की रिश्वतखोरी देखकर इस्तीफा देने का विचार भी करता है। लेकिन नौकरी ही रोजी रोटी है। इसीलिए दुसरों के समान यह भी रिश्वत लेने लगता है। और एक दिन मैजिस्ट्रेट के हाथों रिश्वत

1. स्वातंत्र्योत्तर हिंदी कहानी में मानव प्रतिमा, डा. हेतु भारद्वाज , पृ. 141

2. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ-भाग-2, सम्पा अशोक शास्त्री, पृ. 18

लेते हुए पकड़ा जाता है। दफ्तर के सब लोग उसपर व्यंग्य कसते है। प्रताप को गिरफ्तार किया जाता है। इस चुंगल से निकलने के लिए रिश्वत का सहारा लेता है और छुटता है। तरक्की के लिए भ्रष्टाचार जरूरी है यह विचार उसके मन में आता है। और रिश्वत का नया तरीका खोजता है ताकि बड़ी रक्कम की रिश्वत देकर बड़ा अफसर बने।

पंच परमेश्वर :-

`पंच परमेश्वर` इस कहानी में पंच चौधरी के माध्यम से देहात में चलनेवाले भ्रष्टाचार का चित्रण दिखाया है। चन्दा और कन्हाई दोनों चचेरे भाई है। कन्हाई अधेड उम्र का हो गया है उसकी अब तक शादी नहीं हुई है। चन्दा की शादी फुलो से हो गयी है। चन्दा गरीब है काम करने से ही उसका चुल्हा जलता है। कन्हाई के पास पैसों की कमी नहीं है। एक दिन फुलो अपना घर छोड़कर कन्हाई के घर हमेशा के लिए चली जाती है। चन्दा कन्हाई और फूलो के खिलाफ पंचायत बुलवाता है। लेकिन कन्हाई ने अपनी चाल से पंचों को खरीद लिया है-

``चौधरी ने झूमते हुए कहा - ``अरे काहे की फिकर है तुझे ?`` कन्हाई ने हर्ष से कुल्हड़ फिर भर लिया और चौधरी के `हां-हां` करते भी उनके कुल्हड़ में आधी बोतल खाली कर दी। और उसके बाद चेतना के सत पर वही अंधकार छा गया जो बाहर एकाग्रचित्त होकर तड़प रहा था।``[1]

पंच चौधरी को रूपये खिलाकर, शराब पिलाकर भ्रष्टाचार के सहारे कन्हाई ने पंचायत को फैसला अपनी तरफ किया। और बेचारा चन्दा अकेला तड़पता रहा।

भय :-

`भय` इस कहानी में पुलिसों में चलने वाला भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। कुन्दन तुरसी का साला है। एक दिन वह तुरसी के बेटे की पत्नी के साथ बलात्कार करता है। और रंगे हाथों पकड़ा जाने के बाद तुरसी आदि को बुरी तरह पिटता है और भाग जाता है। तुरसी न्याय चाहता है। वह पुलिस थाने जाता है। तब उसे वहाँ पता चलता है कि कुंदन दरोगा को पैसे देकर गया है।

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 43

-जिस समय वे दरोगा के पास पहुँचे सिपाही ने कहा - ``कुदंन आया था दो सौ दे गया है ?``

दो सौ ! तुरसी ने लड़खडाती जबान से कहा।

``तो तीन सौ मैं दूँगा।``[1]

तुरसी तीन सौ रूपये दरोगा को देता है। पर कुंदन जात पंचायत में रिश्वत खिलाकर फैसला अपनी ओर कर लेता है। तुरसी अपनी बहू की बलात्कार की बात पंचायत में नहीं कहता और फैसला कुंदन की ओर हो जाता है।

तिरिया :-

`तिरिया` इस कहानी में पुलिसों में चलनेवाला भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। अधेड उम्र का पिल्ली मन्दो से शादी करता है। मन्दो का चाल-चलन अच्छा नहीं है। उसका हमेशा पान खाकर जगह-जगह थूंकना लोगों को अच्छा नहीं लगता। अत: पिल्ली जब काम पर जाता ``गाँव के लोग मन्दो को कोसते रहते है। एक दिन पिल्ली काम पर से आते ही वह देखता है कि मन्दो रूठ कर बैठी है। पिल्ली के पूछने पर वह गाँव के लोगों की उससे शिकायत करती है। पिल्ली क्रोधित हो जाता है। गाँव का चौकीदार पिल्ली से मन्दो की शिकायत करने लगता है तो मन्दो अपना जूता फेंककर उसे मारती है। गाँव के सामने हुए इस अपमान का बदला लेने के लिए चौकीदार लक्खा बुढे गुलाब के माध्यम से पुलिस को रिश्वत खिलाता है।

-``लक्खा चौकीदार नहीं समझा। गुलाब उसे ले चला सीधा थाने पर गया और थानेदार को एकांत में सारी कथा सुनाकर कहा- ``अब कहो मालिक का करै ----।``

बीस रूपये उनके हाथ में सरका दिये। थानेदार साहब दुबले-पतले आदमी, थे गाँव के पर शहर में पढ़े थे। फूल सूंघते थे और रेशमी रूमाल रखते थे। बात करने की फीस लेकर उन्होंने माथे में बल डालकर कहा -जवान है।``[2]

---

1. रांगेय राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-1, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 180
2. रांगये राघव की संपूर्ण कहानियाँ -भाग-2, सम्पा. अशोक शास्त्री, पृ. 44

अदालत में मुकदमा चलता है। अपनी चालाखी से मन्दो खुद को छुड़ा लेती है। पर बेकसूर पिल्ली को जेल हो जाती है।

निष्कर्ष :-

इस प्रकार डा. रांगेय राघव जी की कहानियों में अनेक विशेषताएँ मिलती है। राघवजी ने अपनी कहानियों में सामाजिक आदर्श, अन्धविश्वास, प्रेम, यथार्थ, झूठ और पाखण्ड, मजदूर-किसानों का संघर्ष और भ्रष्टाचार का चित्रण किया है। राघव जी ने यथार्थ भाव को अत्यंत सहज और चमत्कारिक रूप से अपनी कहानियों में लाने की कोशिश की है। रांगेय राघव जी की कहानियों ने हिन्दी साहित्य में अपना अलग स्थान निर्माण किया है। उनके कलम में जो शक्ती थी वह उनके साहित्य में देखने को मिलती है। राघव जी के कहानी साहित्य में से प्रतिनिधि कहानियों का अध्ययन करके उनकी विशेषताएँ बताने का प्रयत्न किया है।

****